मध्यकालीन समाज
(Society during Medieval Period)

मध्यकालीन समाज
↓
क्षैतिज विभाजन
↓
- हिन्दू
  ↓
  लम्बवत् विभाजन
  ↓
  - वर्ण एवं जाति
  - महिलाओं की सामाजिक दशा में गिरावट- पर्दा प्रथा, जौहर प्रथा
- मुसलमान
  ↓
  मिल्लत अथवा अवाम की अवधारणा
  ↓
  भारतीय जाति व्यवस्था का प्रभाव
  ↓
  - अशराफ (सबसे श्रेष्ठ मुसलमान)
  - अजलाफ (निम्न जाति से आये थे।)
  - अरजाल (अछूत मुसलमान)

तुर्की शासन की स्थापना का उत्तर भारत के समाज पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव था- समाज का क्षैतिज विभाजन। इससे पूर्व हिन्दू समाज वर्ण एवं जाति के आधार पर लम्बवत् रूप में विभाजित था, परन्तु अब हिन्दू और मुसलमान के बीच क्षैतिज रूप में विभाजन हो गया।

हिन्दू समाज

आरम्भ में 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग भौगोलिक क्षेत्र के सन्दर्भ में हुआ था, परन्तु तुर्की शासन की स्थापना के पश्चात् भारत में निवास करने वाले गैर तुर्की लोगों को 'हिन्दू' कहा जाने लगा।

उस काल में हिन्दू समाज वर्ण व जाति में विभाजित था। सैद्धान्तिक तौर पर हिन्दू समाज चार वर्णों में विभाजित था- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इस काल तक आकर उन वर्णों की हैसियत में परिवर्तन आने लगा था। चूँकि यह संकट का काल था, इसलिये पहले ब्राह्मणों के लिये, जो व्यवसाय आपद् धर्म के रूप में स्वीकृत किया गया था, वह अब सामान्य तौर पर अपना लेने की छूट दी गयी।

क्षत्रिय वर्ण की स्थिति सामान्य रही, हालांकि तुर्की आक्रमण से राजपूतों की शक्ति को धक्का लगा था। फिर इस काल में वैश्यों की सामाजिक दशा में थोड़ी गिरावट देखी गयी। पीछे अलबरुनी के द्वारा भी इस बात की पुष्टि की गयी थी कि शूद्रों के साथ-साथ वैश्यों को भी वेद पाठ करने एवं उसे सुनने का अधिकार नहीं है।

फिर वर्ण एक आदर्श परिकल्पना थी, वहीं जाति समाज का यथार्थ था। वर्ण तो चार ही रहे, परन्तु जातियों की संख्या हजारों में हो गयी। फिर इस काल में नये-नये पेशे के आगमन से नयी-नयी जातियाँ अस्तित्व में आयीं।

- **इस्लाम ने भारत की जाति व्यवस्था पर क्या प्रभाव छोड़ा?**

इस्लाम का आगमन समानता और बन्धुता के नारे के साथ हुआ था। अतः उसने सैद्धान्तिक तौर पर जाति व्यवस्था को चुनौती दी। भारतीय समाज में एक बड़ी संख्या शूद्रों व अछूतों की थी। अतः भय यह था कि ये समूह टूटकर इस्लाम की ओर जा सकता है, इसलिये हिन्दू समाज की ओर से दो प्रकार की प्रतिक्रिया देखी गयी-

1. **रूढ़िवादी प्रतिक्रिया**- पुराने स्मृति ग्रंथों पर टीकाएँ लिखकर हिन्दू जाति व्यवस्था को और भी कठोर बनाने का प्रयत्न किया गया, परन्तु यह व्यावहारिक समाधान नहीं था।
2. **रचनात्मक प्रतिक्रिया**- यह प्रतिक्रिया भक्ति आन्दोलन के रूप में व्यक्त हुई। एक तरफ निर्गुण भक्ति ने जाति विभाजन को ही अस्वीकार कर दिया, वहीं सगुण भक्ति ने कम से कम जाति व्यवस्था के कड़वेपन को कम करने का प्रयास किया।

इसके अतिरिक्त हम भारत की जाति व्यवस्था पर तुर्की शासन का निम्नलिखित प्रभाव देख सकते हैं-

- फारसी चक्र के प्रचलन के कारण जाट जाति, जो पहले पशुचारक थी, वह कृषक बनती चली गयी। इससे उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी हुई, अतः उसने सामाजिक स्तर को भी ऊँचा उठाने का प्रयास किया। जहाँ जाटों का एक समूह सिख पंथ की ओर मुड़ गया, तो वहीं दूसरा समूह मथुरा में कृष्ण भक्ति की ओर।
- तुर्क लोग भारत में नवीन प्रौद्योगिकी लेकर आये थे, परन्तु आरम्भ में भारतीय शिल्पियों ने इस प्रौद्योगिकी को अपनाने में रुचि नहीं दिखाई क्योंकि यहाँ पर जाति और शिल्प के बीच गहरा सम्बंध था (प्रो. इरफान हबीब)। इसलिये पहली आवश्यकता थी जाति व शिल्प के बीच के सम्बन्धों को कमजोर करना और यह भूमिका निर्गुण भक्ति ने निभाई (कबीर व नानक)। इस प्रकार नवीन शिल्पों ने नये सांस्कृतिक आन्दोलन को भी प्रोत्साहन दिया।

जैसा कि हम जानते हैं तथा इसकी पुष्टि प्रो. इरफान हबीब के लेखन से होती है कि आरम्भ में निम्न जाति के लोगों ने नवीन शिल्पों को अपनाने में रूचि नहीं दिखाई थी, इसलिये बड़ी संख्या में दासों को लगाया गया था। इस प्रकार, नवीन शिल्पों ने दास प्रथा को प्रोत्साहन दिया।

■ हिन्दू समाज में महिलाओं की स्थिति

इस काल में महिलाओं की हीन स्थिति थी। पहले की तुलना में इसमें गिरावट देखी गई। इसके निम्नलिखित कारण थे-

- इस काल में इस्लाम का सामना करने के क्रम में विद्वानों के द्वारा स्मृति ग्रंथों पर टीकाएँ लिखकर जाति व्यवस्था को और भी कठोर बनाने का प्रयास किया गया। इस कारण महिलाओं की सामाजिक दशा में गिरावट आयी। भक्ति आंदोलन भी इसमें कोई मौलिक परिवर्तन नहीं ला सका।
- आक्रमण और युद्ध की स्थिति में महिलाओं को सुरक्षित रखने और उसे कुदृष्टि से बचाने की चिंता के कारण पर्दा प्रथा को प्रोत्साहन दिया गया तथा राजपूत राज्यों में जौहर की घटना घटित हुई। अमीर खुसरो पहला समकालीन लेखक है जो रणथम्भौर के किले पर महिलाओं के जौहर की घटना का आँखों देखा विवरण देता है।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि बाल विवाह, विधवाओं की दयनीय स्थिति, सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराई पहले से ही प्रचलित थी और इस काल में भी जारी रही। इब्नबतूता अपने विवरण में सती की घटना का जिक्र करता है। फिर इस काल में पर्दा प्रथा और जौहर प्रथा जैसी घटनाओं को प्रोत्साहन मिला।

मुस्लिम समाज

इस्लाम अपने स्थापना काल से ही सामाजिक बन्धुता के आदर्श से प्रेरित रहा था। परन्तु मुस्लिम समाज भी कोई आदर्श समाज नहीं था, बल्कि इसके अन्दर भी एक प्रकार का आन्तरिक विभाजन कायम हो चुका था।

- **नृजातीय आधार पर विभाजन** - खुरासानी, तुर्क, ताजिक, अफगान आदि।
- **कुलीनता के आधार पर** - कुलीन एवं दास
- **जातीय आधार पर** -

यह विभाजन भारत की भूमि पर देखा गया। इस्लाम समानता के नारे के साथ आया था, परन्तु वह हिन्दुस्तान में स्थापित जाति व्यवस्था को समाप्त तो नहीं कर सका, बल्कि इस्लाम स्वयं प्रचलित जाति व्यवस्था से प्रभावित हो गया। हिन्दुस्तान में मुसलमान सैद्धान्तिक तौर पर तो नहीं, परन्तु व्यावहारिक तौर पर जाति में विभाजित हो गये।

यह गौर करने वाली बात है कि न तो इस्लाम का स्वरूप एकरूप रह गया और न ही मुस्लिम समाज एकाश्म। हिन्दुस्तान की भूमि पर हिन्दू समाज एवं सूफी पंथ ने इस्लाम और मुस्लिम समाज को बदल दिया। यही वजह है कि दक्षिण एशिया का इस्लाम, अरब क्षेत्र व मध्य एशिया के इस्लाम से पृथक हो गया। वर्तमान में चिंता की बात यह है कि बढ़ती हुई धार्मिक कट्टरता के युग में हिन्दुस्तान का इस्लाम भी अपना उदार स्वरूप खोता जा रहा है।

उपर्युक्त कारकों ने मुस्लिम समाज को व्यावहारिक रूप में निम्नलिखित समूहों में विभाजित कर दिया- अशराफ, अजलाफ एवं अरजाल।

- **अशराफ :** अशराफ समूह में कुलीन मुसलमान शामिल थे। फिर इन्हें भी दो उपसमूहों में बाँटकर देखा जाता था– अहल-ए-सैफ और अहल-ए-कलम।

अहल-ए-सैफ में प्रायः राजनीतिक, प्रशासनिक एवं सैन्य क्षेत्र में सक्रिय कुलीनों की गणना की जाती थी। इनके बीच भी एक प्रकार का स्तरभेद हो चुका था, जो इस प्रकार हैं- खान, मलिक व अमीर।

दरबार में कार्य करने वाले तथा प्रशासनिक पदों पर नियुक्त अपेक्षाकृत निम्न स्तर के अधिकारियों को अमीर का दर्जा प्राप्त था, वहीं मलिक का पद वरिष्ठ अधिकारियों को दिया जाता था। बरनी व मिन्हाज-उस-सिराज जैसे लेखकों ने जिन कुलीनों की चर्चा की है, वे प्रायः मलिक स्तर के होते थे अर्थात् अमीरों से ऊपर। दूसरी तरफ, खान, सर्वोच्च स्तर था जो मंगोल प्रभाव में विकसित हुआ था। चंगेज खान के अधीन 10000 सैनिकों से अधिक के प्रधान को 'खान' कहा जाता था। परन्तु सल्तनत काल में खान, पद के बदले एक उपाधि बनकर रह गया था जो किसी मलिक को विशिष्ट सेवा के बदले सम्मान के तौर पर दिया जाता था। जैसे- बलबन को 'उलूग खाँ' की उपाधि मिली थी।

अहल-ए-कलम में लिपिक, विद्वान, उलेमा आदि शामिल थे। सल्तनत की स्थापना के आरम्भिक दिनों में राज्य संघर्ष, विस्तार एवं युद्ध में उलझा हुआ था। इसलिये अहल-ए-सैफ की तुलना में अहल-ए-कलम को कम महत्व प्राप्त था। परन्तु आगे चलकर जब राज्य में स्थिरता आयी, बौद्धिक गतिविधियों का महत्व बढ़ा और शासन को वैधता दिलाने के लिये उलेमाओं के समर्थन की जरूरत पड़ी, तो अहल-ए-कलम का भी महत्व बढ़ता चला गया। फिर भी अहल-ए-कलम की तुलना में अहल-ए-सैफ अधिक प्रभावी बना रहा।

- **अजलाफ**- इसमें निम्नवर्गीय मुसलमान शामिल थे; यथा- दस्तकार व कारीगर, किसान, निम्न पेशेवर समूह आदि। इनमें से बड़ी संख्या धर्मान्तरित हिन्दुओं की भी थी। चूँकि इस्लाम वैज्ञानिक स्तर पर समानता की बात करता था, इसलिये धर्म के आधार पर तो भेदभाव नहीं था, परन्तु व्यवहार में अशराफ व अजलाफ के बीच दूरी थी। इनके बीच वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित नहीं होता था।

• **अरजाल**– हिन्दू समाज से धर्मान्तरित अछूत आगे चलकर एक पृथक समूह में स्थापित हो गये, जिन्हें 'अरजाल' कहा जाता था। व्यवहार में मुस्लिम समाज में भी इनके साथ अलगाव की भावना बनी रही।

■ **इस्लाम के अंतर्गत महिलाओं की दशा**

पैगम्बर मोहम्मद ने पुरुषों व महिलाओं के बीच समानता की बात कही थी, परंतु आगे चलकर इस्लाम के स्वरूप में आने वाले बदलाव के साथ महिलाओं की सामाजिक स्थिति गिरती गयी।

पुरुषों में बहुविवाह का प्रचलन तो मुस्लिम शरीयत के द्वारा ही समर्थित था, फिर पर्दा प्रथा का भी प्रचलन हो चुका था। यह सम्भ्रांतता का प्रतीक माना जाता था तथा प्राचीन यूनान व ईरान में भी इसका प्रचलन रहा था। मुस्लिम शरीयत के अनुसार, महिलाओं को संपत्ति व उत्तराधिकार से भी वंचित रखा गया। जैसाकि हमने देखा कि तमाम गुणों के बाद भी रजिया सुल्तान को इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी के रूप में वैधता नहीं मिल सकी। हिंदू समाज की तरह मुस्लिम समाज में भी महिलाओं की हीन दशा थी।

प्रश्नः सल्तनत काल में दास व्यवस्था और जाति व्यवस्था।

उत्तरः सल्तनत काल में दास व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था का अध्ययन समाज पर पड़ने वाले तकनीकी के प्रभाव के संदर्भ में किया जा सकता है। भारत में हम प्राचीन काल से ही दासों का उल्लेख पाते हैं। सल्तनत काल में भी दास व्यवस्था को प्रोत्साहन मिला। जैसा कि हम जानते हैं कि तुर्कों के अधीन बड़ी संख्या में नवीन शिल्पों का आगमन हुआ था तथा इन शिल्पों को उत्पादन की प्रक्रिया में शामिल किया गया था। अब इन शिल्पों के संचालन के लिये श्रमिकों की आवश्यकता थी। आरंभ में भारतीय शिल्पियों ने इन शिल्पों को अपनाने में तत्परता नहीं दिखाई। अतः इन शिल्पों के संचालन के लिये बड़ी संख्या में दासों की ज़रूरत पड़ी। यह भी एक कारण है कि मुहम्मद गोरी से लेकर फिरोज़शाह तुगलक तक लगभग सभी सुल्तानों ने दासों के संग्रह पर बल दिया। फिरोज़शाह तुगलक के अधीन 1 लाख 80 हज़ार दास थे तथा उसने दासों के निर्यात पर पाबंदी लगा दी थी। बरनी भी दिल्ली में एक दास बाज़ार का जिक्र करता है। हालाँकि, इन दासों को सैनिक सेवा में भी लिया गया था तथा इनका एक भाग उत्पादन में भी लगाया गया था। चूँकि उत्पादन में इन दासों का महत्त्व था, इसलिये पूरे सल्तनत काल में दास व्यवस्था चलती रही। मुगल काल में आकर स्थिति परिवर्तित हो गई। भारत में प्रचलित जाति व्यवस्था पर भी हम तकनीकी का प्रभाव महसूस कर सकते हैं। भारत में शिल्पियों की एक बड़ी संख्या निम्न जातियों से संबद्ध थी। भारत में शिल्प और तकनीकी जाति व्यवस्था से जुड़ी हुई थी तथा अपने पेशे को परिवर्तित करने में कई प्रकार की रुकावटें थीं।

वस्तुतः तुर्की शासन की स्थापना ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था पर आधारित भारतीय कुलीन वर्ग को कमज़ोर कर दिया। दूसरी तरफ तुर्की शासन की स्थापना ने नगरों एवं कस्बों में नए आर्थिक अवसर प्रदान किये। शासक वर्ग की ज़रूरत को पूरा करने के लिये बड़ी मात्रा में उत्पादनों की ज़रूरत पड़ी तथा उत्पादन के संचालन के लिये शिल्पियों के एक वर्ग की भी आवश्यकता महसूस हुई। निम्न जाति से संबद्ध भारतीय शिल्पी नगरों एवं कस्बों में नवीन शिल्पों के प्रति दिलचस्पी दिखाने लगे, किंतु जैसा कि हम जानते हैं कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जाति और शिल्प के बीच गहरा संबंध था।

अतः नए शिल्प को अपनाने के लिये जाति का बंधन तोड़ना आवश्यक था। इसलिये सल्तनत काल में नगरों एवं कस्बों में एकेश्वरवादी आंदोलन अथवा निर्गुण भक्ति के विकास को इस संदर्भ में भी देखा जा सकता है। निर्गुण भक्ति ने जाति बंधन को कमज़ोर कर नवीन शिल्पों को प्रोत्साहन दिया। कबीरदास और नानक इस एकेश्वरवादी आंदोलन के प्रवर्तक बने। कबीरदास और नानक दोनों ने जाति व्यवस्था को अस्वीकार किया। कबीरदास ने निम्न जाति के शिल्पियों को एक नया आश्वासन दिया। दूसरी तरफ गुरुनानक के विचारों के प्रभाव में पंजाब में खत्री जाति एवं जाट एक पृथक् समुदाय के रूप में संगठित हो गए, जिसे हम सिख के रूप में जानते हैं।

इस प्रकार सल्तनत काल में नवीन शिल्पों के आगमन ने दास व्यवस्था और जाति व्यवस्था दोनों को प्रभावित किया।

■■■